C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6)8

बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन खेत में जी तोड़-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी मात्र एक इच्छा थी। वह उडुपि के मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि दक्षिण कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है। वह अपनी गरीबी के कारण तीर्थयात्रा की इच्छा पूरी नहीं कर पाता था। इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। समय के साथ-साथ हरिहर की आर्थिक स्थिति भी सुधरती गई। अब उसने तीर्थयात्रा की योजना बनाई। उसकी पत्नी ने उसके लिए पर्याप्त भोजन बाँध दिया। हरिहर तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ उडुपि की ओर चल दिया। मार्ग में उसे एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा से कराह रहा था। जैसे ही हरिहर की नजर उस पर पड़ी, उसका ह्रदय करुणा से भर गया। उसने बूढ़े के पास जाकर पूछा, “बाबा, क्या तुम भी तीर्थयात्रा करने उडुपि जा रहे हो?” बूढ़े ने उत्तर दिया, “मेरा एक बेटा बीमार है और दूसरे बेटे ने भी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया। फिर मैं तीर्थयात्रा कैसे करूँ।”

हरिहर समझता था कि दिन-दुखियों की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है इसलिए उसने उडुपि जाने से पहले बूढ़े के घर जाने का निश्चय किया। उसके साथियों ने उसे बहुत समझाया "बहुत मुश्किल से तुमने धन एकत्र किया है, अगर यह नष्ट हो गया तो फिर तुम कभी तीर्थयात्रा नहीं कर पाओगे।" हरिहर पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया। लेकिन इन सारे कार्यों में उसके सारे पैसे खर्च हो गए।

अब उसने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया। उसे उडुपि न जा पाने का बिल्कुल भी दुःख न था क्योंकि वह जानता था कि उसने अपना सारा धन दिन-दुखियों की सेवा में खर्च किया था। घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बता दीं। पत्नी भी इस पर प्रसन्न हुई क्योंकि वह भी एक धार्मिक स्वभाव की महिला थी। उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जी उससे कह रहे थे, "हरिहर तुम मेरे सच्चे भक्त हो। तुमने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं मैं ही था। तुम्हारी परीक्षा के लिए ही मैं उस बूढ़े आदमी का वेश धारण कर आया था। तुम मेरे सच्चे सेवक हो।" इस तरह हरिहर बगैर तीर्थयात्रा पर गए पुण्य का भागीदार बना।

1. हरिहर क्या काम करता था?
2. हरिहर को तीर्थयात्रा के मार्ग में कौन मिला?
3. हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की सहायता कैसे की?
4. हरिहर ने घर लौटने का निश्चय क्यों किया? वहाँ लौटने पर हरिहर ने क्या स्वप्न देखा?
5. इस गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है?

प्र. 2 . निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

किस भाँति जीना चाहिए किस भाँति मरना चाहिए,
सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद-चिन्ह उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए,
निज पूर्व-गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए,
आओ मिलें सब देश-बांधव हर बनकर देश के,
साधक बने सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है, ऐक्य मिट सकता अहो,
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो।।
प्राचीन हो कि नवीन, छोड़ो रूढ़ियाँ जो हों बुरी,
बनकर विवेकी तुम दिखाओं हंस जैसी चातुरी,
प्राचीन बातें ही भली हैं, यह विचार अलीक है
जैसी अवस्था हो जहाँ वैसी व्यवस्था ठीक है,
मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा।
देकर उन्हें साहाय्य भरसक सब विपत्ति व्यथा हरो,
निज दुःख से ही दूसरों के दुःख का अनुभव करो।।

(i) हमें पूर्वजों से क्या-क्या सीखना चाहिए?
(ii) विविध सुमनों की एक माला से कवि क्या समझाना चाहता है?
(iii) भाव स्पष्ट कीजिए -"मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा"।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।

देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।

स्वदेश प्रेम
कवि - रामनरेश त्रिपाठी

1. कवि ने सच्चे प्रेम के विषय में क्या बताया है तथा क्यों? 2
2. देश-प्रेम से किसका विकास होता है तथा किस प्रकार? समझाकर लिखिये। 2

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(क) मोहन ने कार्ड छपवाए शादी के लिए। (मिश्र वाक्य)
(ख) नीचे गिरने के कारण गिलास टूट गया। (संयुक्त वाक्य)
(ग) गली में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए। (सरल वाक्य)

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 1x4=4

(क) मैं पिछले साल <u>उसे</u> मुंबई में मिला था।
(ख) हम अपने देश पर मर मिटेंगे।
(ग) क्षमा <u>दसवीं</u> कक्षा में पढ़ती है।
(घ) रमा पत्र लिखती है।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

(क) मम्मी कुर्ता धोती है। कर्मवाच्य में बदलिए।
(ख) सोहन आँगन में सोता है। भाववाच्य में बदलिए।
(ग) कलाकार मूर्ति गढ़ता है। कर्मवाच्य में बदलिए।
(घ) युवा पत्रकारों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है। कर्तृवाच्य में बदलिए।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशो में प्रयुक्त रस पहचानिए : 1x4=4

1. भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले॥

2. "हा ! वृद्धा के अतुल धन हा ! वृद्धता के सहारे।
हा ! प्राणों के परमप्रिय हा ! एक मेरे दुलारे।
हा ! शोभा के सप्त सम हा ! रूप लावण्य हारे।
हा ! बेटा हा ! हृदय धन हा ! नेत्र तारे हमारे।"

3. ओझरी की झोरी कांधे आंतनि की सेल्ही बांधे,
मूड के कमंडल खपर किए कोरिके।
जोगिन झुटुन झुंड-झुंड बनी तापसी-सी,
तीर तीर बैठी सो समरि सरि खोरि के।
सोनित सो सानि-सानि गुदा खात सतुआ से,
प्रेत एक पियत बहोरि घोरी-घोरि के।
तुलसी नेटल भूत, साथ लिए भूतनाथ,
हेरि-हेरि हंकेत है हाथ जोरी-जोरि के।

4. "किलकत कान्ह घुटरूवन आवत।
मनिमय कनक नन्द कै आँगन बिंब पकरिबै धावत।
कबहु निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हंसत राजत दुवै दतियां, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नन्द बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, 'सूर' के प्रभु कौ दुध पियावति।।

खंड - ग

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1+2+2)=5

किंतु, खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगाबिन भगत साधु थे-साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरनेवाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दोटूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता! कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ थे; लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते जो उनके घर से चार कोस दूर पर था एक कबीरपंथी मठ से मतलब! वह दरबार में 'भेंट' रूप रख लिया जाकर 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुजर चलाते!

(क) बालगोबिन भगत किसकी कसौटी पर खरे उतरने वाले थे?
(ख) बालगोबिन भगत की आजीविका का साधन क्या था?
(ग) लोगों के कुतूहल का क्या कारण था?

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?
(ख) नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंतत: सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?
(ग) एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?
(घ) देश की आजादी के संघर्ष में मन्नू भण्डारी की सक्रिय भागीदारी को लेकर पिताजी के साथ उनके टकराव की स्थिति को अपने शब्दों में लिखिए।

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (1+2+2)=5

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना। छाया मत छूना

(क) 'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है?

(ख) कवि ने छाया' को छूने के लिए मना क्यों किया है?

(ग) 'छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

(ख) 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

(ग) आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना?

(घ) संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

प्र. 12. साना साना हाथ जोडि रचना प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कभी का जिक्र किया गया है, प्रदूषण के कौन-कौन से दुष्यपरिणाम सामने आए है लिखें।

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

- निरक्षरता एक अभिशाप

- हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर

प्र. 14. आपके मोहल्ले में जल-आपूर्ति नियमित रुप से नहीं हो रही है जल - संस्थानक के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए। 5

अथवा

माताजी की बीमारी की सूचना अपनी बहन को पत्र द्वारा दीजिए।

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

गर्मी में इस्तमाल होनेवाले टेलकम पाउडर का विज्ञापन तैयार कीजिए।

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6)8

बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन खेत में जी तोड़-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी मात्र एक इच्छा थी। वह उडुपि के मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि दक्षिण कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है। वह अपनी गरीबी के कारण तीर्थयात्रा की इच्छा पूरी नहीं कर पाता था। इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। समय के साथ-साथ हरिहर की आर्थिक स्थिति भी सुधरती गई। अब उसने तीर्थयात्रा की योजना बनाई। उसकी पत्नी ने उसके लिए पर्याप्त भोजन बाँध दिया। हरिहर तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ उडुपि की ओर चल दिया। मार्ग में उसे एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा से कराह रहा था। जैसे ही हरिहर की नजर उस पर पड़ी, उसका ह्रदय करुणा से भर गया। उसने बूढ़े के पास जाकर पूछा, “बाबा, क्या तुम भी तीर्थयात्रा करने उडुपि जा रहे हो?” बूढ़े ने उत्तर दिया, “मेरा एक बेटा बीमार है और दूसरे बेटे ने भी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया। फिर मैं तीर्थयात्रा कैसे करूँ।”

हरिहर समझता था कि दिन-दुखियों की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है इसलिए उसने उडुपि जाने से पहले बूढ़े के घर जाने का निश्चय किया। उसके साथियों ने उसे बहुत समझाया "बहुत मुश्किल से तुमने धन एकत्र किया है, अगर यह नष्ट हो गया तो फिर तुम कभी तीर्थयात्रा नहीं कर पाओगे।" हरिहर पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया। लेकिन इन सारे कार्यों में उसके सारे पैसे खर्च हो गए।

अब उसने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया। उसे उडुपि न जा पाने का बिल्कुल भी दुःख न था क्योंकि वह जानता था कि उसने अपना सारा धन दिन-दुखियों की सेवा में खर्च किया था। घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बता दीं। पत्नी भी इस पर प्रसन्न हुई क्योंकि वह भी एक धार्मिक स्वभाव की महिला थी। उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जी उससे कह रहे थे, "हरिहर तुम मेरे सच्चे भक्त हो। तुमने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं मैं ही था। तुम्हारी परीक्षा के लिए ही मैं उस बूढ़े आदमी का वेश धारण कर आया था। तुम मेरे सच्चे सेवक हो।" इस तरह हरिहर बगैर तीर्थयात्रा पर गए पुण्य का भागीदार बना।

1. हरिहर क्या काम करता था?

   उत्तर : हरिहर खेती-बाड़ी का काम करता था।

2. हरिहर को तीर्थयात्रा के मार्ग में कौन मिला?

   उत्तर : मार्ग में हरिहर को एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी।

3. हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की सहायता कैसे की?

उत्तर : हरिहर बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया।

4. हरिहर ने घर लौटने का निश्चय क्यों किया? वहाँ लौटने पर हरिहर ने क्या स्वप्न देखा?

उत्तर : बूढ़े की सहायता में हरिहर के सारे पैसे खर्च हो गए। अत: हरिहर ने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया।

उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जो उससे कह रहे थे कि हरिहर ही उनका सच्चा भक्त है। हरिहर ने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं स्वयं श्रीकृष्ण ही थे। हरिहर की परीक्षा के लिए ही श्रीकृष्ण ने बूढ़े आदमी का वेश धारण किया था। श्रीकृष्ण ने यह भी कहा कि हरिहर ही उनका सच्चा सेवक है।

5. इस गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : इस गद्यांश से सच्ची भक्ति की शिक्षा मिलती है। सच्ची भक्ति तीर्थयात्रा करने, दान-पुण्य करने या जप-तप करने में नहीं होता है। सच्ची भक्ति तो निस्वार्थ भाव से दीन-दुखियों की सेवा और परोपकार में होता है।

प्र. 2 . निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

किस भाँति जीना चाहिए किस भाँति मरना चाहिए,
सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद-चिन्ह उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए,
निज पूर्व-गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए,
आओ मिलें सब देश-बांधव हर बनकर देश के,
साधक बने सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है, ऐक्य मिट सकता अहो,
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो।।
प्राचीन हो कि नवीन, छोड़ो रूढ़ियाँ जो हों बुरी,
बनकर विवेकी तुम दिखाओं हंस जैसी चातुरी,
प्राचीन बातें ही भली हैं, यह विचार अलीक है
जैसी अवस्था हो जहाँ वैसी व्यवस्था ठीक है,
मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा।
देकर उन्हें साहाय्य भरसक सब विपत्ति व्यथा हरो,
निज दुःख से ही दूसरों के दुःख का अनुभव करो।।

(i) हमें पूर्वजों से क्या-क्या सीखना चाहिए?
उत्तर : हमें अपने पूर्वजों से जीना-मरना सीखना चाहिए।

(ii) विविध सुमनों की एक माला से कवि क्या समझाना चाहता है?
उत्तर : विविध सुमनों की एक माला से कवि समझाना चाहता है कि सभी संप्रदाय के लोगों को देश में मिल-जुल कर रहना चाहिए।

(iii) भाव स्पष्ट कीजिए -"मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा"।
उत्तर : "मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा" का अर्थ है - विकट परिस्थितियों में आगे बढ़कर देश को सहारा देना चाहिए।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।

देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।

स्वदेश प्रेम
कवि - रामनरेश त्रिपाठी

1. कवि ने सच्चे प्रेम के विषय में क्या बताया है तथा क्यों? 2

उत्तर : कवि के अनुसार सच्चा प्रेम आत्मबलिदान की भावना से ही परिपूर्ण होता है। कवि मानता है कि त्याग के बिना प्रेम उसी तरह है जिस तरह आत्मा के बिना शरीर अर्थात् त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि देश के नौजवानों को अपने अन्दर सदैव त्याग की भावना रखनी चाहिए तथा देश के लिए समय आने पर बलिदान हेतु तैयार रहना चाहिए।

2. देश-प्रेम से किसका विकास होता है तथा किस प्रकार? समझाकर लिखिये। 2

उत्तर : कवि ने यहाँ पर स्पष्ट रूप से कहा है कि देश-प्रेम की भावना से ही मनुष्यता का विकास होता है। देश और देशवासी एक दूसरे के पूरक हैं। देश-प्रेम की भावना को अपने अंदर समाहित करने से मनुष्य में आत्मीय गुणों का विकास होता है। देश के प्रति प्रेम की भावना से ही मन में उदारता,

सहिष्णुता, निस्वार्थता आदि भावनाएँ जागती हैं जो अंत में मनुष्यता का विकास करती है।

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(क) मोहन ने कार्ड छपवाए शादी के लिए। (मिश्र वाक्य)

उत्तर : मोहन ने कार्ड छपवाए वे शादी के लिए थे।

(ख) नीचे गिरने के कारण गिलास टूट गया। (संयुक्त वाक्य)

उत्तर : गिलास नीचे गिरा और टूट गया।

(ग) गली में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए। (सरल वाक्य)

उत्तर : गली में शोर होने पर सब लोग बाहर आ गए।

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 1x4=4

(क) मैं पिछले साल <u>उसे</u> मुंबई में मिला था।

उत्तर : उसे - पुरुषवाचक सर्वनाम, (अन्य) पुल्लिंग, एवं स्त्रीलिंग दोनों में संभव, एकवचन कर्मकारक।

(ख) हम अपने देश पर मर मिटेंगे।

उत्तर : देश पर - संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक।

(ग) क्षमा <u>दसवीं</u> कक्षा में पढ़ती है।

उत्तर : दसवीं - विशेषण, संख्यावाचक, क्रमवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य।

(घ) रमा पत्र लिखती है।

उत्तर : पत्र - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मकारक।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

(क) मम्मी कुर्ता धोती है। कर्मवाच्य में बदलिए।

उत्तर : मम्मी द्वारा कुर्ता धोया जाता है।

(ख) सोहन आँगन में सोता है। भाववाच्य में बदलिए।

उत्तर : सोहन द्वारा आँगन में सोया जाता है।

(ग) कलाकार मूर्ति गढ़ता है। कर्मवाच्य में बदलिए।

उत्तर : कलाकार द्वारा मूर्ति गढ़ी जाती है।

(घ) युवा पत्रकारों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है। कर्तृवाच्य में बदलिए।

उत्तर : युवा पत्रकार इस सभा का आयोजन करते हैं।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशो में प्रयुक्त रस पहचानिए : 1x4=4

1. भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले॥
उत्तर : भयानक रस

2. "हा ! वृद्धा के अतुल धन हा ! वृद्धता के सहारे।
हा ! प्राणों के परमप्रिय हा ! एक मेरे दुलारे।
हा! शोभा के सप्त सम हा ! रूप लावण्य हारे।
हा ! बेटा हा ! हृदय धन हा ! नेत्र तारे हमारे।"
उत्तर : करुण रस

3. ओझरी की झोरी कांधे आंतनि की सेल्ही बांधे,
मूड के कमंडल खपर किए कोरिके।
जोगिन झुटुन झुंड-झुंड बनी तापसी-सी,
तीर तीर बैठी सो समरि सरि खोरि के।

सोनित सो सानि-सानि गुदा खात सतुआ से,
प्रेत एक पियत बहोरि घोरी-घोरि के।
तुलसी नेटल भूत, साथ लिए भूतनाथ,
हेरि-हेरि हंकेत है हाथ जोरी-जोरि के।
उत्तर : वीभत्स रस

4. "किलकत कान्ह घुटरूवन आवत।
मनिमय कनक नन्द कै आँगन बिंब पकरिबै धावत।
कबहु निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हंसत राजत दुवै दतियां, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नन्द बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, 'सूर' के प्रभु कौ दुध पियावति।।
उत्तर : वात्सल्य रस

खंड - ग

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1+2+2)=5

किंतु, खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगाबिन भगत साधु थे-साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरनेवाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दोटूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता! कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ थे; लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते जो उनके घर से चार कोस दूर पर था एक कबीरपंथी मठ से मतलब! वह दरबार में 'भेंट' रूप रख लिया जाकर 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुजर चलाते!

(क) बालगोबिन भगत किसकी कसौटी पर खरे उतरने वाले थे?

उत्तर : बालगोबिन भगत महापुरुष की कसौटी पर खरे उतरने वाले थे।

(ख) बालगोबिन भगत की आजीविका का साधन क्या था?

उत्तर : बालगोबिन भगत की आजीविका का साधन खेती था।

(ग) लोगों के कुतूहल का क्या कारण था?

उत्तर : बालगाबिन भगत साधु थे-साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरनेवाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते,उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दोटूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर : चश्मेवाला कभी सेनानी नहीं रहा परंतु चश्मेवाला एक देशभक्त नागरिक था। उसके हृदय में देश के वीर जवानों के प्रति सम्मान था। वह अपनी ओर से एक चश्मा नेताजी की मूर्ति पर अवश्य लगाता था उसकी इसी भावना को देखकर लोग उसे कैप्टन कहते थे।

(ख) नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंतत: सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर : नवाब साहब द्वारा दिए गए खीरा खाने के प्रस्ताव को लेखक ने अस्वीकृत कर दिया। खीरे को खाने की इच्छा तथा सामने वाले यात्री के सामने अपनी झूठी साख बनाए रखने के उलझन में नवाब साहब ने खीरा खाने की सोची परन्तु जीत नवाब के दिखावे की हुई। और इसी इरादे से नवाब साहब ने खीरा सूँघ कर फेंक दिया।

नवाब के इस स्वभाव से ऐसा प्रतीत होता है कि वो दिखावे की जिंदगी जीते हैं। खुद को अमीर सिद्ध करने के लिए वो कुछ भी कर सकते हैं।

(ग) एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?

उत्तर : लेखिका की माँ अशिक्षित एवं घरेलू महिला थीं। लेखिका के माँ के साथ लेखिका के पिताजी का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे पूरी तरह से अपने पति के अधीन थीं तथा सदैव उनसे भयभीत रहती थीं। वे कभी पति से लडाई-झगडा नहीं करती थीं। यही नहीं वे अपने पति की अनुचित डाँट-फटकार का भी कभी प्रतिरोध नहीं करती थीं। स्त्री के प्रति ऐसे व्यवहार को लेखिका कभी भी उचित नहीं समझती थी। अपने माँ के प्रति ऐसा व्यवहार लेखिका को उनके पिताजी का ज़्यादती लगता था। उनकी सारी जिंदगी पति की डाँट-फटकार सुनते तथा अपने बच्चों की माँगों को पूरा करते गुजरी थी। इसप्रकार लेखिका के जीवन में उसके माँ का व्यक्तित्व का कोई विशेष प्रभाव न पड़ सका। इसलिए लेखिका उन्हें व्यक्तित्वहीन कहती है।

(घ) देश की आजादी के संघर्ष में मन्नू भण्डारी की सक्रिय भागीदारी को लेकर पिताजी के साथ उनके टकराव की स्थिति को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : अपने सामर्थ्य के अनुरूप देशभक्ति करने वाला प्रत्येक व्यक्ति देशभक्त है। देश की आजादी के संघर्ष में मन्नू भंडारी सक्रिय थीं परन्तु उनके पिताजी चाहते थे कि वे घर और कालेज के अतिरिक्त कहीं न जाए। लेखिका कॉलेज के दिनों में विद्रोही स्वभाव वाली बन चुकी थी। देश की आजादी के लिए संघर्ष करने की भावना से वह प्रेरित हो चुकी थी। मन्नू भंडारी कालेज के छात्रों के साथ हड़ताल में सम्मिलित होती थीं तथा सरकार के विरोध में भाषण देती थीं। एक बार उन्होंने अजमेर के सबसे मुख्य चौराहे पर हजारों विद्यार्थियों के समक्ष धुआँधार भाषण दिया। उसके जोशीले भाषणों से युवा वर्ग प्रभावित रहता, जुलूस चलाती, उसकी गतिविधियों को देखकर लगता कि वह अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिए कृतसंकल्प है।किसी व्यक्ति ने उनके पिताजी से इस बात की शिकायत की। पिताजी ने निर्णय किया कि वे अब मन्नू को घर से बाहर नहीं जानें देंगे परन्तु उनके एक अन्य मित्र के समझाने पर पिताजी ने अपना यह निर्णय रद्द कर दिया। वस्तुत: पिताजी अपनी सामाजिक छवि के प्रति अत्यन्त सजग रहते थे। इस कारण उनका मन्नू से टकराव रहता था।

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (1+2+2)=5

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना। छाया मत छूना

(क) 'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में छाया शब्द का प्रयोग सुखद अनुभूति के लिए किया है।

(ख) कवि ने छाया' को छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर : कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। अपने वर्तमान के कठिन पलों को बीते हुए पलों की स्मृति के साथ जोड़ना हमारे लिए बहुत कष्टपूर्ण हो सकता है। वह मधुर स्मृति हमें कमज़ोर बनाकर हमारे दुख को और भी कष्टदायक बना देती है।

(ग) 'छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इसका तात्त्पर्य है - जब हम पुरानी यादों में जीते हैं तो हमारे सामने न केवल बीती हुई मीठी यादों के दृश्य सामने आ जाते हैं, बल्कि उन क्षणों की सुगंध भी तरोताज़ा हो उठती है।

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर : परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए -

(1) बचपन में तो हमने कितने ही धनुष तोड़ दिए परन्तु आपने कभी क्रोध नहीं किया इस धनुष से आपको विशेष लगाव क्यों हैं?

(2) हमें तो यह असाधारण शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा।

(3) श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वत: टूट गया।

(4) इस धनुष को तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा था। इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलना था?

(ख) 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है क्योंकिं इसमें अतृप्ति के सिवाय कुछ नहीं मिलता। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। उन्हें छूकर याद करने से मन में दुख बढ़ जाता है। दुविधाग्रस्त मन:स्थिति व समयानुकूल आचरण न करने से भी जीवन में दुख आ सकता है। व्यक्ति प्रभुता या बड़प्पन में उलझकर स्वयं को दुखी करता है।

(ग) आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना?

उत्तर : 'कन्यादान' कविता नारी जागृति से संबंधित है। इन पंक्तियों में लड़की की कोमलता तथा कमज़ोरी को स्पष्ट किया गया है। माँ स्वयं नारी होने के कारण समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं और कथित आदर्शो के बंधनों के दुख को झेल चुकी थी। उन्हीं अनुभवों के आधार पर वह अपनी बेटी को अपनी कमज़ोरी को प्रकट करने से सावधान करती है क्योंकि कमज़ोर लड़कियों का शोषण किया जाता है।

(घ) संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर : संगतकार के माध्यम से कवि किसी भी कार्य अथवा कला में लगे सहायक कर्मचारियों और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है। जैसे संगतकार मुख्य गायक के साथ मिलकर उसके सुरों में अपने सुरों को मिलाकर उसके गायन में नई जान फूँकता है और उसका सारा श्रेय मुख्य गायक को ही प्राप्त होता है।

प्र. 12. साना साना हाथ जोडि रचना प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कभी का जिक्र किया गया है, प्रदूषण के कौन-कौन से दुष्यपरिणाम सामने आए है लिखें।

उत्तर : आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रदूषण का मौसम पर असर साफ दिखाई देने लगा है। प्रदूषण के कारण वायुमण्डल में कार्बनडाइआक्साइड की अधिकता बढ़ गई है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती जा रही है। इससे साँस की अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी है। जलवायु पर भी इसका बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है जिसके कारण कहीं पर बारिश की अधिकता हो जाती है तो किसी स्थान पर सूखा पड़ जाता है। कहीं पर बारिश नाममात्र की होती है जिस कारण गर्मी में कमी नहीं होती। गर्मी के मौसम में गर्मी की अधिकता देखते बनती है। कई बार तो पारा अपने सारे रिकार्ड को तोड़ चुका होता है। सर्दियों के समय में या तो कम सर्दी पड़ती है या कभी सर्दी का पता ही नहीं चलता। ये सब प्रदूषण के कारण ही सम्भव हो रहा है। ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य में कान सम्बन्धी रोग हो रहे हैं। जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ जल पीने को नहीं मिल पा रहा है और पेट सम्बन्धी अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

निरक्षरता एक अभिशाप

निरक्षरता मानव जीवन में एक अभिशाप है। निरक्षर नागरिक किसी भी देश के लिए अभिशाप होते हैं। अशिक्षित होना एक अभिशाप है, देश के मस्तक पर कलंक है।

निरक्षरता के कारण देशवासियों को घोर संकटों का सामना करना पड़ा है, चाहे वे सामाजिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो अथवा वैयक्तिक हो। शिक्षा के अभाव में न हम अपना व्यापार ही बढ़ा सके और न ही औद्योगिक क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति कर सके। जमींदारों, सूदखोरों ने निर्धन किसानों का शोषण उनकी निरक्षरता का लाभ उठाकर ही किया। पीढ़ियाँ बीत जाती थीं, किंतु कर्जे से मुक्ति नहीं मिलती थी विश्व में साक्षरता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने 17 नवंबर, 1965 को आठ सितंबर का दिन विश्व साक्षरता दिवस के लिए निर्धारित किया था। 1966 में पहला विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया था और तब से हर साल इसे मनाए जाने की परंपरा जारी है. साक्षरता दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य आम जनता को साक्षर होने के लाभों से अवगत कराना है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत के लिए निरक्षरता को एक अभिशाप माना और आजादी के 60 साल के बाद भी हम इस अभिशाप से मुक्ति पाने में पूरी तरह से असफल रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि साक्षरता का अर्थ केवल पढ़ने-लिखने और हिसाब-किताब करने की योग्यता प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि हमें नवसाक्षरों में नैतिक मूल्यों के प्रति आदरभाव रखने की भावना पैदा करना होगी।

आज विश्व आगे बढ़ता जा रहा है और अगर भारत को भी प्रगति की राह पर कदम से कदम मिलाकर चलना है तो साक्षरता दर में वृद्धि करनी ही होगी। शिक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक उत्थान के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा से ही मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति

जागरूक होता है। मनुष्य शिक्षा के अभाव में दुर्बल, निसहाय, अंधविश्वासी आदि दुर्भावनाओं से ग्रसित हो जाता है।
निरक्षरता के अभिशाप को दूर करने के लिए कोई उम्र या समय की सीमा नहीं होती इसलिए हर व्यक्ति को अपने जीवन में अक्षर ज्ञान प्राप्त कर नया उजाला लाना चाहिए। हम अपने देश का कल्याण करना चाहते हैं, तो प्रत्येक देशवासी का शिक्षित होना आवश्यक है।

हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर

भारत में तरह-तरह के पक्षी है। किंतु राष्ट्रीय पक्षी होने का गौरव केवल मोर को प्राप्त है। इन्हें वैसे नदी व जलस्त्रोतों के पास वाले जंगल पसंद होते हैं। ये अकसर घने पेडों वाले इलाके में रहते हैं। मोर के सर पर मुकुट जैसी खूबसूरत कलगी होती है। इसकी लम्बी गर्दन पर सुन्दर नीला मखमली रंग होता है।
मोर मुख्य रूप से घास-पात, ज्वार, बाजरा, चने, गेहू, मकई जैसे अनाज खाते हैं। यह बैंगन, टमाटर, प्याज जैसी सब्जियाँ भी खाते हैं। अनार, केला, अमरूद आदि भी इसके प्रिय भोजन हैं। मोर कीड़े-मकोड़े, चूहे, छिपकली, साँपों आदि को भी चाव से खाते है। ये साँपों के सबसे बड़े दुश्मन हैं। कहावत है कि जहाँ मोर की आवाज सुनाई पड़ती है, वहाँ नाग भी नहीं जाता। इसलिए यह किसानों का अच्छा मित्र होता है।
मोर का नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। मयूर नृत्य समूह में किया जाता है। नृत्य के समय मोर अपने पंख फैला कर बडा सुंदर मगर धीमी गति का नृत्य करता है। इसके नृत्य को देखकर मानव इतना प्रभावित हुआ है कि मयूर नृत्य को हमने नृत्य में शामिल कर लिया है।
इसके अलावा भरतनाट्यम जैसे शास्त्रीय नृत्य मोर के नृत्य की तर्ज पर होते हैं।
मोर भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखते हैं। बहुत पहले प्राचीन हिंदू धर्म में इंद्र की छवि मोर के रूप में चित्रित की गई थी। भगवान कृष्ण तो अपने सिर पर मोरपंख लगाते थे। दक्षिण भारत में मोर भगवान कार्तिकेय के वाहन के रूप में जाना जाता है। मोर का शिकार भारत में

पूर्णतया प्रतिबंधित है। इसे भारतीय वन्य-जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत पूर्ण संरक्षण दिया गया है।

प्र. 14. आपके मोहल्ले में जल-आपूर्ति नियमित रुप से नहीं हो रही है जल - संस्थानक के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए। 5

सेवा में
मुख्य अधिकारी
जल संस्थान
दिल्ली।
दिनाँक : 5 फरवरी, 2015

विषय : जल - आपूर्ति नियमित करवाने हेतु आवेदन पत्र।
महोदय
सविनय निवेदन है कि मैं रामकृष्ण नगर का निवासी हूँ। मेरी कॉलोनी में चार दिनों से पानी बहुत कम आ रहा है। जो थोड़ा-सा जल आता भी है, उसकी स्थिति यह है कि पीने लायक नहीं होता।
जल व्यवस्था एक आवश्यक सेवा है। आशा है कि आप इस समस्या पर गौर करेंगे और शीघ्र ही आवश्यक कार्यवाही द्वारा कॉलोनी में नियमित, पर्याप्त एवं शुद्ध जल की पूर्ति की व्यवस्था करवाओंगे। धन्यवाद
भवदीय
प्रफुल्ल कुमार

अथवा

माताजी की बीमारी की सूचना अपनी बहन को पत्र द्वारा दीजिए।
सीता भवन
दिल्ली।
दिनाँक : 5 फरवरी, 2015
प्रिय बहन
मधुर प्यार।
तुम्हारी कुशलता की कामना करते हुए यह पत्र लिखना आरंभ कर रही हूँ।

तुम्हें यह बताना था कि पिछले कुछ दिनों से माता जी की तबियत कुछ ठीक नहीं है। कल दूसरे डाक्टर को दिखाया, तो खून की कमी बताई। डाक्टर के कहे अनुसार इलाज़ शुरु कर दिया है।

तुम चिंता न करना। आशा है कि माता जी कुछ दिनों में बिल्कुल ठीक हो जाएँगी।

तुम्हारी बड़ी बहन

मीरा व्यास

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

गर्मी में इस्तमाल होनेवाले टेलकम पाउडर का विज्ञापन तैयार कीजिए।